NEERAJ®

चीन का इतिहास : 1840–1978

(History of China: C. 1840-1978)

B.H.I.E.-141

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Prieti Gupta* & *Harmeet Kaur*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

चीन का इतिहास : 1840–1978

(History of China : C. 1840-1978)

Question Paper—June–2024 (Solved) 1
Question Paper—December–2023 (Solved) 1
Question Paper—June–2023 (Solved) 1
Question Paper—December–2022 (Solved) 1
Question Paper—Exam Held in July 2022 (Solved) 1
Sample Question Paper–1 (Solved) 1
Sample Question Paper–2 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. चीन : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य 1
(China: A Historical Perpective)

2. चीन में अफीम युद्ध 12
(The Opium Wars in China)

3. असमान संधि प्रणाली–चीन 24
(The Unequal Treaty System in China)

4. ताइपिंग विद्रोह 34
(Taiping Uprising)

5. बॉक्सर विद्रोह 46
(Boxer Rebellion)

6. स्वयं सशक्तिकरण आंदोलन और सौ दिनों के सुधार 56
(Self-Strengthening Movement and the Hundred Days Reforms)

7. 1911 की चीनी क्रांति 68
(The Chinese Revolution of 1911)

8. 1911 की विफलता और गुओमिंदांग का उद्‌भव (1911–21) 79
(The Failure of 1911 and the Emergence of the Guomindang - 1911-21)

9. सांस्कृतिक आंदोलन 88
(The Cultural Movement)

10. विदेशी पूँजी निवेश और नव वर्ग का उदय 97
(Foreign Investment and Rise of New Class)

11. राष्ट्रवाद का उदय 104
(Rise of Nationalism)

12. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (सी.पी.सी.) का निर्माण 112
(Formation of the Communist Party)

13. नियंत्रण के लिए संघर्ष कम्युनिस्ट पार्टी और गुओमिंदांग 120
(Struggle for Control: The Communist Party and the Guomindang)

14. चीनी कम्युनिस्ट पार्टी और जापान के साथ युद्ध 130
(China Communist Party and the War with Japan)

15. चीन की क्रांति 139
(The Chinese Revolution)

16. चीनी क्रांति से सुधार तक (1949-1978) 149
(China from Revolution to Reform (1949-1978)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

चीन का इतिहास : 1840-1978

(History of China : C. 1840-1978)

B.H.I.E.-141

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्न अवश्य कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. पहला अफीम युद्ध क्यों हुआ था? पश्चिम की ओर चीन की प्रतिक्रिया पर एक लेख लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-21, प्रश्न 1, पृष्ठ-15, 'पश्चिमी ताकतों की उपस्थिति पर चीन की प्रतिक्रिया'

प्रश्न 2. बॉक्सर विद्रोह के कारणों का विश्लेषण कीजिए। इस विद्रोह का क्या महत्त्व था?

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-53, प्रश्न 2

प्रश्न 3. 1914-1919 की समयावधि में चीन में प्रमुख राजनैतिक घटनाक्रमों पर संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-8, पृष्ठ-82, प्रश्न 2, पृष्ठ-83, प्रश्न 3

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) चीनी विचारधारा पर बुद्ध धर्म का प्रभाव

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'चीनी चिंतन का विकास और बौद्ध धर्म का प्रभाव'

(ख) आत्म-मजबूती का आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-6, पृष्ठ-56, 'स्वयं सशक्तिकरण का आंदोलन : प्रथम चरण

भाग-II

प्रश्न 5. 1911 के आन्दोलन के पश्चात् चीन में एक नई संस्कृति के उदय पर एक लेख लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-89, '1911 की क्रांति' और 'नव संस्कृति'

प्रश्न 6. चीन के साम्यवादी दल के उदय एवं उसकी गतिविधियों पर एक निबन्ध लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-115, प्रश्न 3 तथा प्रश्न 4

प्रश्न 7. माओ जेदोंग/माओत्से तुंग के अन्तर्गत चीन के एक समाजवादी तंत्र में रूपांतरण पर संक्षेप में लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-141, 'नया शासन : राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढाँचा', पृष्ठ-142, 'उद्योग', पृष्ठ-147, प्रश्न 1

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त लेख लिखिए–

(क) सन यातसेन

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-123, प्रश्न 1

(ख) लाल चीनी सेना के आधार क्षेत्र (Red Bases)

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-136, प्रश्न 5

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

चीन का इतिहास : 1840-1978

B.H.I.E.-141

(History of China : C. 1840-1978)

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए। प्रत्येक भाग से कम-से-कम दो प्रश्न कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

भाग-I

प्रश्न 1. उन्नीसवीं सदी में पूर्व चीन के शेष विश्व के साथ संबंध पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-4, 'उन्नसवीं शताब्दी से पूर्व चीन और विश्व'

प्रश्न 2. ताइपिंग विद्रोह विफल क्यों हुआ? चीन पर इसका क्या प्रभाव पड़ा?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-36, 'ताइपिंग का पतन' तथा पृष्ठ-41, प्रश्न 8

प्रश्न 3. 1911 की चीनी क्रांति पर एक लेख लिखिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-7, पृष्ठ-71, '1911 की क्रांति'

प्रश्न 4. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) सौ दिनों का सुधार

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-60, 'सौ दिनों के सुधार'

(ख) चार मई का आन्दोलन

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-80, 'चार मई का आन्दोलन'

भाग-II

प्रश्न 5. बीसवीं सदी में चीन में राष्ट्रवाद के उदय की व्याख्या कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-106, प्रश्न 2

प्रश्न 6. संयुक्त मोर्चे के गठन का कारण क्या था? गुओमिंदंग (Guomindang) और चीन के साम्यवादी दल के बीच अलगाव के कारणों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-13, पृष्ठ-120, 'संयुक्त मोर्चे का गठन' तथा पृष्ठ-125, प्रश्न 4

प्रश्न 7. 1949 के पश्चात् चीन में नई व्यवस्था की आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक रूपरेखा का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-141, 'नया शासन : राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक ढाँचा', 'भूमि सुधार', पृष्ठ-142, 'उद्योग'

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त लेख लिखिए–

(क) युआन शिकाई

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-8, पृष्ठ-82, 'युआन शिकाई की मृत्यु और राजनैतिक विभाजन'

(ख) ग्रेट लीप फॉरवर्ड

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-150, 'द ग्रेट लीप फॉरवर्ड' (जी.एल.एफ.)'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

चीन का इतिहास : 1840–1978
(History of China : *C.* 1840-1978)

चीन : एक ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
(China: A Historical Perpective)

1

परिचय

चीन संसार की सबसे पुरानी सभ्यताओं में से एक रहा है। एक समृद्ध सभ्यता होने के कारण चीनी अर्थव्यवस्था ने हमेशा दुनिया भर के व्यापारियों को आकर्षित किया है। चीन के इतिहास का अध्ययन करते समय, चीनी साम्राज्य की छोटी इकाइयों के टूटने और 20वीं शताब्दी के दौरान 50 वर्षों की छोटी अवधि के भीतर फिर से एकजुट होने की प्रक्रिया के बारे में कई प्रकार के सवाल खड़े होते हैं। विदेशी आक्रमणकारियों द्वारा बार-बार पराजित और अपमानित होने के बावजूद, चीन अपना अस्तित्व बचाए रखने में सफल रहा और दुनिया के शक्तिशाली राष्ट्रों में प्रमुख रूप से उभरा। चीनी इतिहास की कुछ मुख्य युगांतकारी घटनाओं के अतिरिक्त छिंग शासन के बारे में भी वर्णन किया गया है।

अध्याय का विहंगावलोकन

चीन के बारे में बदलती समझ

चीन पर आधारित पहले के पश्चिमी आख्यान पश्चिम द्वारा चीन पर हमले पर केंद्रित थे, जो उनके अनुसार अपरिहार्य या उचित था। उन्होंने पश्चिम के साथ पर्याप्त तरीके से व्यवहार न करने के लिए चीन को ही उत्तरदायी माना। उन्होंने साम्यवाद के उदय के पीछे के कारणों पर भी ध्यान केंद्रित किया। इसके अलावा, 'चीन-केंद्रवाद' की धारणा को सामने रखते हुए, पश्चिमी विद्वानों ने तर्क दिया कि खुद को दूसरों से श्रेष्ठ मानने की प्रबल धारणा के कारण चीन ने अन्य देशों को मान्यता नहीं दी। आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना करने में चीन की 'विफलता' की पश्चिमी-व्युत्पन्न कथा और चीन की पारंपरिक सभ्यता और संस्थानों को इसके लिए उत्तरदायी ठहराने जैसे कारणों को अब स्वीकार नहीं किया जाता है। आधुनिक विद्वानों ने हाल के दशकों में अभूतपूर्व 'चीन के उदय' की व्याख्या करने के लिए चीन के अतीत और उसकी परंपराओं पर जोर दिया है। अर्थव्यवस्था के व्यावसायीकरण, शहरीकरण, साक्षरता के प्रसार, तकनीकी विकास आदि जैसी प्रक्रियाओं के आधार पर विद्वानों ने अब आधुनिक चीन की शुरुआत को सत्रहवीं शताब्दी के मध्य में छिंग अवधि या 16वीं और 17वीं शताब्दी में 'मिंग-छिंग संक्रमण' या और अधिक पूर्व शुंग काल से मानना शुरू कर दिया है। यह अध्ययन पश्चिम द्वारा चीन पर हमले से पूर्व की चीन में चल रही आंतरिक प्रक्रियाओं और प्रारंभिक आधुनिक यूरोप की प्रक्रियाओं में एक उल्लेखनीय समानता को दर्शाता है।

अंत में, यह धारणा कि चीन का गैर-चीनी लोगों के प्रति तिरस्कारपूर्ण रवैया था, को इस आधार पर खारिज कर दिया गया कि बौद्ध धर्म चीन का महत्त्वपूर्ण धर्म था, भारतीय उपमहाद्वीप से, मध्य और दक्षिण-पूर्व एशिया के माध्यम से आया था। इसके अलावा, चीन लगभग सोलहवीं शताब्दी से वैश्विक प्रवाह के केंद्र में था और रेशम, चीनी मिट्टी के बर्तन और चाय जैसे चीनी सामान विभिन्न देशों में लोकप्रिय थे और अपने इतिहास में कुछ निश्चित अवधियों को छोड़कर, चीन के शासकों ने विदेशी व्यापार को सुविधाएँ भी प्रदान की थीं।

चीन का ऐतिहासिक विकास

चीन के भूगोल में येलो और यांगसी नदियों और कई अन्य जलमार्गों के साथ उपजाऊ मैदान, एक लंबी तटीय क्षेत्र, दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम में घने जंगलों वाली पहाड़ियाँ, उच्च तिब्बती पठार और पश्चिम-दक्षिण-पश्चिम में हिमालयी रेंज, शीतोष्ण कटिबंध शामिल हैं। वन क्षेत्र उत्तर-पूर्व में साइबेरिया की सीमा से लगा हुआ है और एक विशाल और शुष्क रेगिस्तानी क्षेत्र भी सुदूर पश्चिम और उत्तर-पश्चिम में स्थित है। हाल के दशकों में पुरातात्विक खोज कांस्य युग की सभ्यता के कई केंद्रों की उपस्थिति की पुष्टि करती है। उत्तरी चीन में अन्यांग के क्षेत्र में व्यापक सामग्री पायी गयी है तथा इस क्षेत्र को शांग नामक राज्य के रूप में पहचाना गया है। पुरातात्विक साक्ष्य स्तरीकृत समाज और एक धार्मिक राज्य की उपस्थिति को दर्शाते हुए उनके

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

नियंत्रण में विशाल श्रमबल होने की पुष्टि करते हैं। वर्तमान चीनी लिपि के पूर्वगामी के रूप में लिखित भाषा का विकास स्पष्ट रूप से पहचाना जा सकता है, 'प्राक्ख्यापन अस्थियों' पर पाया गया लेखन शांग वंश के शासकों द्वारा दिव्य दुनिया से संवाद स्थापित करने के प्रयासों को दर्शाता है।

दूसरी सहस्राब्दी ईसा पूर्व के अंत में जोउ राजवंश के संस्थापक द्वारा शांग शासकों को पराजित किया गया था। जोउ राजवंश चीनी इतिहास में सबसे लंबे समय तक चलने वाला राजवंश था, जो तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक बना रहा। जोउ पहला राजवंश है, जिसके लिए साहित्यिक रिकॉर्ड उपलब्ध हैं। इस अवधि के दौरान चीन में कई महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय विचारधाराएँ स्थापित की गईं। लोहे के उपयोग से कृषि उत्पादकता में वृद्धि के साथ-साथ युद्ध के लिए हथियार बनाने में भी वृद्धि हुई। हालांकि जोउ शासकों का सीधा शासित वास्तविक क्षेत्र सीमित था, जबकि शाही परिवार के सदस्यों और कुलीन सदस्यों द्वारा शासित क्षेत्र अधिक विस्तारित था, जो जोउ अधिपति के प्रति वफादार रहे। 8वीं शताब्दी ईसा पूर्व के आसपास, जोंगगुओ के नाम से जाने जाने वाले क्षेत्र में रियासतों के बीच बढ़ती प्रतिद्वंद्विता को जोउ काल के पतन के लिए उत्तरदायी माना जा सकता है। चीन के उत्तर-पश्चिमी भाग में छिंग राज्य के शासक की जीत के साथ, चीन में एक एकीकृत साम्राज्य की स्थापना हुई। 221 ईसा पूर्व में छिंन शिहुआंगड़ी ने स्वयं को 'छिंग का पहला सम्राट' घोषित किया।

चीनी चिन्तन का विकास और बौद्ध धर्म का प्रभाव

जोउ शासन के अंतर्गत धन में वृद्धि और नई प्रौद्योगिकियों के उदय के साथ-साथ अन्य परिस्थितियों के परिणामस्वरूप विभिन्न सामाजिक और बौद्धिक परिवर्तन हुए, जिसके कारण 'सौ मतों' का पदार्पण हुआ। विभिन्न दार्शनिकों ने अपने आसपास तेजी से हो रहे परिवर्तनों की ओर ध्यान दिया। इनमें 550 ईसा पूर्व में पैदा हुए कन्फ्यूशियस सबसे प्रमुख चीनी दार्शनिक थे, जिन्हें मास्टर कुंग या कुंगफूजी भी कहा जाता है। इन्होंने व्यवस्था में परिवर्तन को नैतिक पतन के रूप में संदर्भित किया था। उन्होंने लोगों के बीच पारिवारिक रिश्तों और आपसी दायित्वों का सम्मान करने पर बल दिया। उनका मानना था कि यदि प्रतिभाशाली व्यक्ति शासन करते हैं तो समाज में नैतिक व्यवस्था और समृद्धि बहाल हो जाएगी। मनुष्य के गुणों का आंकलन शिक्षा और योग्यता के आधार पर होना चाहिए, न कि जन्म के आधार पर। शासन के नैतिक आधार पर शिक्षाएँ तथा व्यवस्था और पदानुक्रम का सम्मान करना कन्फ्यूशियस दर्शन की विशिष्ट विशेषताएँ बन गयी हैं तथा वे चीनी लोकाचार में अभिन्न रूप से सम्मिलित हो गयीं। कन्फ्यूशियस की बातें उनके जीवनकाल के बाद उनके शिष्यों द्वारा अनालेक्ट्स में एकत्र की गईं। उसी अवधि के आसपास लाओ जी द्वारा दाओवाद नामक एक अन्य दर्शन का जन्म हुआ, जिसके मूल ग्रंथ को दाओ दे जिंग कहा जाता है। कन्फ्यूशियस ने जहाँ सामाजिक व्यवस्था, संरचना और शासन पर जोर दिया, दाओवाद ने माना कि मनुष्य को चीजों के प्राकृतिक क्रम या 'दाओ' (सामान्यत: मार्ग) के अनुरूप रहने की आवशयकता है।

दाओवाद एक रहस्यमय दर्शन था, जो सहजता और अंतर्ज्ञान पर जोर देता था। आमतौर पर, कन्फ्यूशियस ग्रंथों के प्रत्यक्ष, नैतिक और उपदेशात्मक स्वर के विपरीत, दाओवादी कृतियां अक्सर पहेलियों और दृष्टांतों में व्यक्त की जाती हैं। बहुत अलग विचारधाराओं, कन्फ्यूशियसवाद और दाओवाद के सह-अस्तित्व ने चीनी आध्यात्मिक दुनिया को गहराई व जटिलता प्रदान की। हालांकि कन्फ्यूशियसवाद प्रमुख रहा, इसने कभी भी दाओवाद के महत्त्व को विस्थापित नहीं किया, जो चीनी कविता, चित्रकला और चीनी की आंतरिक दुनिया, आम लोगों और विद्वानों दोनों में गहराई से निहित हो गया, लेकिन कन्फ्यूशियस और दाओवादी दोनों ही दर्शन ईश्वर या मृत्यु के बाद के जीवन के बारे में चिंतित नहीं थे। इस तत्व को बौद्ध धर्म द्वारा तीसरी शताब्दी सी.ई. के आसपास चीनी विश्वास प्रणाली में सम्मिलित किया गया था। सामाजिक और राजनीतिक अशांति की अवधि में, बौद्ध धर्म ने नैतिक जीवन जीने की संभावना का मार्ग दिखाया। चीन में महायान बौद्ध धर्म की ही प्रधानता थी। इसके रंगीन अनुष्ठान और बुद्ध और बोधिसत्व की दंतकथाएं चीनी आध्यात्मिक जीवन को एक नया आयाम प्रदान करती हैं। बौद्ध संघ द्वारा किए गए विभिन्न कल्याणकारी उपायों ने भी इसकी लोकप्रियता को बढ़ाने में प्रमुख भूमिका निभाई। चीन में बौद्ध धर्म का समावेश इस तर्क का खंडन करता है कि चीन अन्य संस्कृतियों व लोगों के प्रति तिरस्कारपूर्ण भाव रखता है। इस प्रकार, चीनी विश्वास प्रणाली विभिन्न और विपरीत दर्शन और प्रथाओं का एक जटिल मिश्रण थी।

चीनी शाही राज्य और स्टेपी (Steppe) की चुनौती

221 ईसा पूर्व में छिंग शिहुआंगड़ी द्वारा एक केंद्रीय प्रशासित साम्राज्य की स्थापना चीनी इतिहास में एक प्रमुख मील का पत्थर थी। पहले सम्राट, किन शिहुआंगड़ी ने पहली बार साम्राज्य को केंद्र प्रशासित प्रांतों में विभाजित किया। समान कानूनी संहिता का प्रवर्तन, एकीकृत लिपि और भार, नापतौल और सिक्का प्रणाली का मानकीकरण छिंन शिहुआंगड़ी की कुछ उल्लेखनीय उपलब्धियाँ थीं। किसानों को स्वतंत्र भू-धारकों में परिवर्तित करके छिंन ने सभी से प्रत्यक्ष कर वसूल किए। उसने ट्रंक सड़कों का निर्माण किया, जो साम्राज्य के विभिन्न हिस्सों को जोड़ती थीं। छिंन ने ही चीन की महान दीवार की नींव रखी।

चीनी साम्राज्य का मूल ढांचा, जो 20वीं शताब्दी तक चला, छिंन शिहुआंगड़ी के मरने से पहले, दो दशकों से भी कम समय में बनाया गया था। छिंग राजवंश का पतन किसान विद्रोह द्वारा हुआ, जो चीन के इतिहास का प्रथम उल्लेखनीय विद्रोह माना गया है। कठोर कानूनों और भारी कर के कारण शिहुआंगड़ी की मृत्यु के बाद संयुक्त रूप से विद्रोह भड़क उठा। इस विद्रोह के नेता ने चार शताब्दियों तक चलने वाले हान राजवंश की नींव

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

रखी। परिधि पर अन्य क्षेत्रों को शामिल करके चीनी साम्राज्य को अलग-अलग समय पर संशोधित किया गया था, जो केंद्र से कम प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के साथ शासित थे। राज्य की विचारधारा पहले सम्राट के सख्त कानूनों और कठोर दंड पर जोर देने के बजाय 'सदाचार द्वारा शासन' की कन्फ्यूशियस धारणाओं से प्रेरित थी। नौकरशाही एक और महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। नौकरशाहों ने मुख्य रूप से विरासत या सिफारिश के बजाय कठोर प्रतियोगी परीक्षाओं के माध्यम से सेवा में प्रवेश किया। इसके परिणामस्वरूप चीनी साम्राज्य में अधिक स्थिरता आई। यद्यपि चीन में विभिन्न राजवंश सत्ता में आए और चीन बार-बार नागरिक संघर्ष और विदेशी आक्रमणों से गुजरा, पिछली साढ़े सातवीं शताब्दी के शाही शासन में, एकीकृत साम्राज्य बरकरार रहा।

विकसित कृषि अर्थव्यवस्था के कारण, चीन की धन-सम्पदा ने अपनी उत्तरी और उत्तर-पश्चिमी सीमाओं पर खानाबदोश लोगों का ध्यान आकर्षित किया। खानाबदोश जातियों कि बेहतर सैन्य क्षमताओं के कारण, चीन को स्टेपी से कई आक्रमणों का सामना करना पड़ा, विशेषतया उन अवधियों में जब राज्य कमजोर था। तीसरी शताब्दी सी.ई. में हान साम्राज्य के पतन के बाद की अवधि के दौरान इन खानाबदोश जातियों ने चीन पर बार बार आक्रमण किया। 13वीं शताब्दी के दौरान कुबिलाई खान के नेतृत्व में मंगोलों ने पहली बार पूरे चीनी साम्राज्य पर जातीय रूप से गैर-चीनी (या गैर-हान) लोगों का शासन स्थापित करने में कामयाबी हासिल की। चार शताब्दियों बाद, मंगोल राजवंश पर महान दीवार के उत्तर-पूर्व के क्षेत्र से मंचू द्वारा आक्रमण किया गया और छिंग राजवंश (चीनी साम्राज्य पर शासन करने वाला अंतिम राजवंश) का शासन शुरू हुआ। सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि चीनी साम्राज्य पर इन गैर-हान राजवंशों के शासन के परिणामस्वरूप साम्राज्य का विघटन नहीं हुआ, बल्कि मंगोल (युवान) और मांचू (छिंग) राजवंशों के तहत साम्राज्य अपेक्षाकृत मजबूत और स्थिर था।

सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन

19वीं शताब्दी के दौरान, चीन में प्रमुख सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक परिवर्तन हुए, जो छिंग सम्राट द्वारा एकीकृत किए गए परिवर्तनों से भिन्न थे।

अभिजात वर्ग से भद्रजन तक—अपने शासन को मजबूत करने के लिए पहले छिंन सम्राट द्वारा शक्तिशाली कुलीन परिवारों की शक्ति समाप्त कर दी गयी थी। उन्होंने राज्य और किसान करदाताओं के बीच सीधा संबंध भी स्थापित किया। हान राजवंश के दौरान, कुलीन अभिजात वर्ग एक बार फिर से पुनर्जीवित हो गए, लेकिन तांग राजवंश के अंत में और गृहयुद्ध के बाद की अवधि में खूनी युद्धों से बुरी तरह प्रभावित हुए, लेकिन अभिजात वर्ग की वास्तविक समाप्ति का महत्त्वपूर्ण कारण प्रतियोगी सिविल सेवा परीक्षाओं के माध्यम से भर्ती का विस्तार है, जो आधिकारिक प्रवेश का माध्यम बन गया। इस स्तर को भद्रजन के रूप में जाना जाने लगा।

जातीय और सांस्कृतिक विविधता—चीनी समाज और संस्कृति में एक विदेशी धर्म (बौद्ध धर्म) का प्रवेश और खानाबदोश आक्रमण ने मिश्रित और जटिल समाज का विकास किया। चीनी और गैर-चीनी के बीच बढ़ते व्यापार सहित बढ़ते अंतर-विवाह और परिवर्तित सामाजिक संबंधों के कारण चीन में संयुक्त स्वदेशी और विदेशी रीति-रिवाजों और परंपराओं के कारण विविध समाज और संस्कृति का जन्म हुआ। उत्तर चीन में अधिक विदेशी प्रभाव के कारण उत्तर-दक्षिण की एक सांस्कृतिक विभाजन की शुरुआत को चिह्नित किया गया।

अर्थव्यवस्था का बढ़ता वाणिज्यीकरण—चीन में शुंग काल (960-1279 सी.ई.) में उल्लेखनीय आर्थिक विकास और अंतर-क्षेत्रीय वाणिज्य का विकास देखा गया। प्रारंभ में, किसान अपने स्वयं के निर्वाह के लिए उत्पादन करते थे और जमींदारों को लगान का भुगतान काने के लिए उत्पादन करते थे, लेकिन बाद में, किसानों ने बाजार के लिए उत्पादन करना शुरू कर दिया। उत्तर चीन में व्याप्त अराजक परिस्थितियों के कारण चीन के अधिक उपजाऊ क्षेत्रों जैसे मध्य और दक्षिणी क्षेत्रों में लोगों का प्रवास और बसावट होने लगी। पानी की प्रचुरता और वहाँ के अनुकूल जलवायु के परिणामस्वरूप चावल की नई किस्मों और कपास या चाय जैसी अन्य व्यावसायिक फसलों सहित कृषि उत्पादकता में काफी वृद्धि हुई है। अंतर-क्षेत्रीय वाणिज्य में वृद्धि ने मुद्रा के महत्व को बढ़ाया, जिससे मुद्रा के नए रूपों का उदय हुआ। इस प्रकार दुनिया की सबसे पुरानी कागजी मुद्रा अस्तित्व में आयी। आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप बाजार आधारित कस्बों, शहरी केंद्रों और काईफेंग और सुजोउ जैसे महान वाणिज्यिक शहरों का विस्तार हुआ। शहरी जीवन ने संस्कृति के विशिष्ट रूप से नए और लोकप्रिय रूपों को भी जन्म दिया। हालांकि, इस वृद्धि के कारण किसान वर्ग के गरीब तबके हाशिए पर चले गए।

जनसंख्या वृद्धि—कृषि उत्पादकता में वृद्धि से चीन की पिछली कुछ शताब्दियों में जनसंख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई थी। छिंग राजवंश के अंतर्गत, जनसंख्या लगभग 500 मिलियन थी। जनसंख्या में इस जबरदस्त वृद्धि ने भूमि पर दबाव बढ़ा दिया। साथ ही, बेटों के बीच भूमि को समान रूप से बांटने की व्यवस्था के कारण समय के साथ परिवार की जोत या भू-धारकता में कमी आई। इस प्रकार, कई किसानों ने अपनी भूमि को छोड़ दिया और फिर इन्हें जमींदारों द्वारा अधिग्रहित कर लिया गया। भूमिहीन किसानों ने या तो काश्तकार खेती की ओर रुख किया या उन्होंने गैर-कृषि व्यवसायों को चुना। कई किसान भी गुप्त समाजों और विद्रोही आंदोलनों में शामिल हो गए, जिन्होंने उन्हें किसी प्रकार की सुरक्षा और आशा प्रदान की।

छिंग (Qing) राजवंश

हालांकि छिंग राजवंश पश्चिम के हाथों चीन के अपमान और शाही व्यवस्था के पतन के लिए जिम्मेदार था, किन्तु यह भी स्वीकार किया जाता है कि उसी राजवंश के अंतर्गत, चीन आकार, शक्ति और समृद्धि के मामले में ऊंचाई पर पहुँच गया था।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

छिंग राजवंश की स्थापना गैर-हान लोगों ने की थी, जो महान दीवार के उत्तर-पूर्व में स्थित मंचूरिया से आए थे। छिंग राजवंश ने 1644 में अंतिम 'शुद्ध' चीनी राजवंश, मिंग को उखाड़ फेंका। मांचू शासकों ने चीनी साम्राज्य में विशाल क्षेत्रों को शामिल करने के लिए विविध तरीके अपनाए। उन्होंने मंगोलिया के कुछ क्षेत्रों, चीनी तुर्किस्तान (बदला हुआ शिनजियांग), तिब्बत और गहरे दक्षिण-पश्चिम के कुछ हिस्सों पर भी विजय प्राप्त की। उनके शासन को लगभग 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक किसी विशेष चुनौती का सामना नहीं करना पड़ा था। 1660 के दशक से 18वीं शताब्दी के अंत तक तीन छिंग सम्राटों ने क्रमवार कुशल तरीके से सिंहासन पर शासन किया। मजबूत और सक्षम शासन के कारण, पूरा प्रशासन प्रभावी ढंग से काम कर रहा था, लेकिन तेजी से बढ़ती आबादी और अर्थव्यवस्था की जरूरत के मुताबिक प्रशासनिक सहायता प्रणालियों का विस्तार नहीं किया गया। इससे प्रशासनिक अक्षमता, भ्रष्टाचार और मनोबल में वृद्धि हुई। एक और समस्या यह थी कि किसी भी बड़ी चुनौती के अभाव में, छिंग सैन्य प्रतिष्ठान को अपने स्वयं के शासन के लिए खतरा बनने से रोकने में अधिक चिंतित हो गए। इसने सेना की लड़ने की क्षमता को गंभीर रूप से प्रभावित किया। वित्तीय समस्याएँ जैसे चांदी की कमी और नागरिक और सैन्य कर्मियों के बीच अफीम-धूम्रपान की आदत के प्रसार जैसी कुछ अन्य समस्याएं थीं, जिन्होंने 19वीं शताब्दी की शुरुआत में छिंग प्रशासन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया था। इस प्रकार, यह माना गया कि छिंग सरकार और अभिजात वर्ग अपने शासन की पिछली शताब्दी में बड़ी चुनौतियों का जवाब देने और प्रमुख पहल करने में असमर्थ हो गए थे।

उन्नीसवीं शताब्दी से पूर्व चीन और विश्व

चीनी केन्द्रवाद (Sinocentrism)–जोंगुओ (Zongguo) और तियानशिया (Tianxia)–'जोंगुओ' शब्द का इस्तेमाल पहली बार जोउ अवधि के दौरान चीन में 'केंद्रीय राज्यों' को संदर्भित करने के लिए किया गया था। हालांकि, जोंगुओ को 'मध्य साम्राज्य' भी कहा जाता है और कई पश्चिमी विद्वानों ने इसका इस्तेमाल यह तर्क देने के लिए किया कि चीनी स्वयं को दुनिया का केंद्र मानते हैं और वे हर किसी को हेय दृष्टि से देखते हैं। हमने देखा कि चीनी अलग-अलग समय पर दूसरे देशों के अस्तित्व और उनकी सैन्य क्षमता या संस्कृति से अवगत थे। चीनी बौद्ध शासकों का यह भी मानना था कि भारत, बौद्ध धर्म का मूल घर, केंद्रीय क्षेत्र था जबकि चीन सिर्फ एक 'सीमावर्ती क्षेत्र' था। एक अन्य अवधारणा अर्थात तियानशिया या 'सब स्वर्ग तले' का उपयोग चीन-केंद्रवाद की धारणा को सुदृढ़ करने के लिए भी किया जाता है। यह उन क्षेत्रों को संदर्भित करने का एक तरीका था, जो केंद्रीय रूप से प्रशासित चीनी साम्राज्य से सटे हुए थे, लेकिन जिन पर सम्राट का प्रत्यक्ष शासन नहीं था। इसमें पूर्वी एशिया के अन्य भाग, मध्य एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया के कुछ भाग सम्मिलित थे, लेकिन इससे यह सिद्ध नहीं होता कि चीन की अधिकांश विदेश नीतियां चीन-केंद्रितता पर निर्भर थीं।

शुल्क व्यवस्था–शब्द 'शुल्क व्यवस्था' का प्रयोग जॉन किंग फेयरबैंक द्वारा अमेरिकी चीनी अध्ययन (American sinology) के सन्दर्भ में किया गया था, ताकि 19वीं शताब्दी के पूर्व के दौरान चीन के विदेशी संबंधों के बारे में व्यापक रूपरेखा को दर्शाया जा सके। इस अवधारणा के अनुसार, चीन ने केवल उन राज्यों और लोगों के साथ संबंध बनाए रखा, जिन्होंने चीनी सम्राट को शुल्क अर्पण किया और इस तरह चीनी सम्राट की श्रेष्ठता को स्वीकार किया। बदले में, चीनी सम्राट आगंतुकों को व्यापार करने के लिए अनुमति देते थे। यह चीनी असाधारणता का प्रतिनिधित्व करता है, जो मुख्य रूप से अपनी प्रतिष्ठा से संबंधित है और इस प्रकार विदेशी संबंधों को स्वार्थ और लाभ के आधार पर संचालित नहीं किया गया था।

इस सिद्धांत को कई विद्वानों ने अस्वीकार कर दिया है, क्योंकि इसने चीनी शासकों द्वारा नियोजित नीतियों और संस्थानों की विशाल श्रृंखला को उचित नहीं ठहराया और 'एक मानक सभी के लिए उपयुक्त' नियम लागू नहीं किया। यह देखा गया कि अधिकांश पश्चिमी देशों को चीन के साथ बिना किसी शुल्क के स्वतंत्र रूप से व्यापार करने की अनुमति दी गई थी। हो सकता है, यह शुल्क प्रणाली मुख्य रूप से मिंग और छिंग की कुछ अवधि के दौरान सीमित हो। एक और तर्क यह है कि मिंग के दौरान, राज्य-नियंत्रित शुल्क आधारित व्यापार चीन द्वारा संचालित विदेशी व्यापार का मुख्य रूप नहीं था।

मुक्त व्यापार के लिए छिंग का विरोधाभास–यह तर्क कि छिंग ने मुक्त व्यापार की सुविधा नहीं दी, केवल अफीम युद्धों के कारण 19वीं शताब्दी में चीन पर थोपी गई असमान संधि प्रणाली का औचित्य सिद्ध करने के लिए पश्चिमी विचारकों द्वारा दिया गया। कुछ मिंग शासकों ने बेशक व्यापार को नियंत्रित करने का प्रयास किया, किन्तु इसके पश्चात् भी चीन वैश्विक व्यापार का प्रमुख भागिदार था और दुनिया भर में चीनी चाय, चीनी मिट्टी के बर्तन और रेशम का व्यापार किया जाता था। छिंग व्यापार से उत्पन्न राजस्व के महत्त्व से अवगत था, उसने व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए कई उपाय किए। रूसियों और जापानी व्यापारियों के लिए विशेष व्यवस्था थी और अन्य विदेशी व्यापारी, बड़े या छोटे, किसी भी बंदरगाह पर आने के लिए स्वतंत्र थे जब तक कि उनके पास व्यापार करने के लिए वस्तुएं थीं। छिंग के विदेशी व्यापार के प्रति विरोधाभास के कारण व्यापार प्रणाली का पतन नहीं हुआ, बल्कि उसके प्रशासनिक ढांचे में कमजोरी के कारण व्यापार कमजोर हुआ।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. तीन मुख्य तरीकों की पहचान कीजिए, जिनसे चीन के ऐतिहासिक विकास के बारे में विद्वानों की समझ बदल गई है।

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com